शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
ISSN 2320 – 0871
17 सितम्बर 2014

दलित समाज के विकास में बौद्ध धर्म का योगदान

नानक चन्द गौतम, अभिनव दिव्यांशु, (शोधार्थी)
इतिहास एवं सभ्यता विभाग
मानविकी और सामाजिक विज्ञान संकाय
गौतम बुद्ध विश्वविद्यालय
ग्रेटर नोएडा, उ.प्र., भारत

शोध संक्षेप

भारतीय दलितों के विकास में सामाजिक असमानता सबसे बडी समस्या है। गौतम बुद्ध ने समाज में निहित जाति व्यवस्था का निराकरण करने के लिए लोगों को समानता, स्वतंत्राता और बंधुत्व का संदेश दिया। गौतम बुद्ध पहले समाज सुधरक थे जिन्होंने वर्ण व्यवस्था को कड़ी चुनौती दी। डॉ.अम्बेडकर मानते हैं कि वास्तविक धर्म समाज का लम्ब होता है। बौद्ध धर्म कोई आविष्कार नहीं बल्कि एक खोज है सच्चे धर्म, सामाजिक समानता की। बौद्ध धर्म का मुख्य उद्देश्य हिंसा को रोकना, समाज में सामाजिक समानता एवं शांति स्थापित करना रहा है। गौतम बुद्ध के शब्दों में जाति महत्तवपूर्ण नहीं है बल्कि मनुष्य प्रधान है। वर्तमान में दलितों का हिंदू धर्म को त्यागकर बौद्ध धर्म में परिवर्तित होना उन तथ्यों की ओर संकेत करता है कि अगर सभी दलित बौद्ध धर्म आत्मसात कर लें तों दैनिक जीवन में शोषण और उत्पीडन की घटनाओं से बचा जा सकता है, क्योंकि बौद्ध धर्म में समानता, मानवता और कर्म को प्रधनता दी गई है।

प्रस्तावना

भारतीय हिन्दू समाज सदियों से जातियों और उपजातियों के बंधनों में जकड़ा हुआ है। इतिहास उन तथ्यों और उन बिन्दुओं को भी उजागर करता है, जिनके कारण भारत में जातिवाद का प्रादुर्भाव हुआ और जिसका प्रकोप आज तक विद्यमान है। अस्पृश्यता वर्ण व्यवस्था का वह अंकुर है जिसने भारतीय समाज को जातिकरण के जाल में समाहित कर लिया है। जाति विभक्तिकरण के कारण समाज में सामाजिक विचारों, राजनीतिक विचारों, धर्मिक विचारों, रहन-सहन और आपसी तालमेल में भी असमानताएं हैं। भारतीय जाति व्यवस्था सामाजिक संस्थान का वह सामान्य रुप है, जिसकी अमिट छाप वर्तमान में भी अपनी पकड़ बनाये हुए है। भारतीय संस्कृति अत्यधिक प्राचीन होते हुए भी विकृतियों से मुक्त नहीं है। इस विकृति में अस्पृश्यता मुख्य है।

भारत में अस्पृश्यता हिंदू धर्म का वह तना है, जिसके माध्यम से जातिवाद का उदय हुआ। हिंदू धर्म के चार प्रमुख वर्ण ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र माने गए। यदि इन्हें चार शक्तियां माना जाए तो कहा जा सकता है कि शास्त्र की शक्ति, शस्त्र की शक्ति, अर्थ की शक्ति और श्रम की शक्ति। कालान्तर में शूद्रों पर सभी वर्णों ने अत्याचार किये। उनके लिए कई कर्म निषिद्ध कर दिए गए। शूद्रों का धन, सम्पति एकत्र करना जुर्म माना गया। किसी भी समुदाय और वर्ग की

उन्नति के आधर हैं, समाज में समानता का अधिकार और शक्ति प्राप्त होना। प्रसिद्ध अंग्रेज विद्वान बकले ने यह प्रतिपादित करने का प्रयास किया था कि किसी राष्ट्र के मनुष्यों के क्रिया कलाप उनके अपने विचार एवं चिन्तन पर उतना निर्भर नहीं करते जितने कि प्राकृतिक और भौगोलिक दशाओं पर। यही कारण है कि मनुवादियों और ब्राहाणवादियों पर प्राकृतिक और भौगोलिक दशाओं का प्रभाव दृष्टिगोचर प्रतीत होता है, क्योंकि प्राकृतिक और भौगोलिक दुंदुभी का सहारा लेकर दलितों को गांवों और नगरों की मुख्य धरा से बाहर रहने के लिए विवश किया गया। जिनकी स्थिति हिन्दू समाज में निचले पायदान पर थी। वर्ण व्यवस्था के अनुसार शूद्रों को हिंदू धर्म का हिस्सा नहीं माना गया।

भारतीय समाज में जाति का महत्तवपूर्ण स्थान है। यह आजन्म मनुष्य के साथ रहती है। इस जाति ने एक बहुत बड़े वर्ग को अपने मूलभूत अधिकारों से वंचित कर दिया। जबकि प्रारम्भ में ऐसा नहीं था। समाज के सबसे निचले तबके को भी शिक्षा और व्यवसाय का चुनाव करने का अधिकार प्राप्त था, क्योंकि कर्म के अनुसार मनुष्य को विद्वान माना गया। सभी मनुष्य के गुण समान हैं और अपने कर्म के आधर पर उच्च पद प्राप्त कर सकते हैं।

दलित समाज और बौद्ध धर्म

बौद्ध काल में दलितों की दशा और दिशा में परिवर्तन आया। गौतम बुद्ध ने जाति व्यवस्था का विरोध किया और दलितों को समाज में सामाजिक समानता दिलाने में अहम भूमिका निभाई। उन्होंने कहा कि जन्म के आधर पर नहीं कर्म के आधर पर मानव को प्रधानता देनी चाहिए चाहे वह ब्राहमण हो, क्षत्रिय हो, वैश्य हो और चाहे शूद्र हो। यह कहना सत्य प्रतीत होता है कि बौद्ध काल को परिवर्तनकारी युग कहा जा सकता है, क्योंकि इस धर्म के अंर्तगत समाज को समता-भाईचारा का संदेश दिया गया। गौतम बुद्ध के शब्दों में शूद्र भी हिंसा, चोरी से दूर रहते हुए स्वर्ग का अधिकारी बन सकता है। बौद्ध धर्म शील के महत्व पर अत्यधिक जोर देता है। बौद्ध धर्म में तत्पुरुषों के शीलों को किसी भी पफूलों की तुलना में अधिक महत्व प्रदान किया है। गौतम बुद्ध ने मनुष्य को सर्वोत्तम माना है। गौतम बुद्ध के शब्दों में जिस प्रकार से गंगा, यमुना, सरयु और माही जैसी नदियां समुंद्र में मिलने पर अपना अस्तित्व खो देती है ठीक उसी प्रकार संघ में आने पर सभी जातियां अपनी पहचान खो देती हैं । उन्होंने सदगुण, ज्ञान और कर्म को मनुष्य की प्रगति का मापदंड बताया है। उनका एक विचार अत्यधिक प्रासंगिक नजर आता है कि घास, पेड, मछली और जानवर आदि विभिन्न प्रकार प्रजातियों में मिलती हैं, लेकिन मनुष्य की केवल एक ही प्रजाति है।

शोध विधि

शोधार्थी द्वारा इस शोध पत्र में दलित चेतना और दलित समाज में आये बदलावों में बौद्ध धर्म के योगदान का सामाजिक परिप्रेक्ष्य में अध्ययन किया गया है।

उद्देश्य

बौद्ध धर्म का दलित समाज पर पडने वाले प्रभावों का आन्दोलनों का अध्ययन।

डॉ.अम्बेडकर के पश्चात् दलितों का बौद्ध रूपांतरण का अध्ययन।

आधुनिक काल में दलित समाज पर बौद्धों का प्रभाव।

उपलब्ध प्राथमिक स्रोतों और द्वितीयक स्रोतों के माध्यम से प्रस्तुत शोध में वर्णित प्रश्नों के उत्तर ढूँढकर शोध पत्र में दिए जायेंगे।

प्रत्येक युग इतिहास का, उसकी परम्पराओं का और प्रयोगों का पुनर्मूल्यांकन करता है। भारत के सामाजिक इतिहास में वर्ण व्यवस्था का महत्तवपूर्ण स्थान है। वर्ण व्यवस्था की अवधरणा जिस तरह समाज में पैदा हुई थी, वर्तमान में उसका भौतिक रूप बदल चुका है। स्वतन्त्रता आन्दोलन के दौरान राजनैतिक आजादी के साथ सामाजिक रूप से समानता पर आधरित आधुनिक समाज का निर्माण करने का दृढ संकल्प लिया गया था। यह निर्णय लिया गया कि जाति, धर्म, लिंग और भाषा के आधर पर किसी के साथ भेदभाव नहीं किया जायेगा। समाज में पिछडेपन और अस्पृश्यता की समस्या का निराकरण करने का वादा भी किया गया, लेकिन भारत में जो आर्थिक और सामाजिक व्यवस्था कायम की गई थी, वह काम पूरी ईमानदारी के साथ नहीं किया गया है।

एन.सी.आर.बी की रिर्पोट 2011 के अनुसार प्रत्येक दिन 3 दलित महिलाओं के साथ दुष्कर्म की घटनाओं को अंजाम दिया जाता है, हर सप्ताह में 5 दलितों के घर जलाये जाते है, 6 का अपहरण होता है, 11 दलितों की पिटाई की जाती है, हर सप्ताह में 13 दलितों की हत्याएँ की जाती है। कुल मिलाकर हर 18वें मिनट में दलितों को शोषित और प्रताडित किया जाता है। यद्यपि आज दलितों में शिक्षा का प्रसार बहुत हुआ है। उन्हें उनके अधिकार मिलने लगे हैं। फिर भी दलितों पर होने वाले अत्याचारों को देख-सुनकर रोंगटे खड़े हो जाते हैं।

सन् 1925 में डॉ.अम्बेडकर ने कहा था कि अस्पृश्यता का सर्मथन करने वाले ये खोखले धर्मशास्त्र सारी जनता का अपमान कर रहे हैं, सरकार को उन्हें बहुत पहले कैद कर लेना चाहिए था। आज हिंदू शास्त्रों में वर्णित कथाओं पर से भरोसा कम हो गया है। भारत में वर्ण व्यवस्था और जाति व्यवस्था हिंदू धर्म में वर्णित सामाजिक और धर्मिक मान्यताओं पर आधरित है, जिसमें समाज को श्रेणीबद्ध करके ऊँच-नीच की दीवार खींच कर जन्म से ही कर्म को थोप दिया जाता है।

डॉ.अम्बेडकर एक महान समाज सुधारक के साथ दूरदर्शी भी थे। डॉ.अम्बेडकर के शब्दों में यदि तालाब में कोई कुत्ता तैर जाये तो हिंदूओं को कोई आपत्ति नहीं थी, यदि कोई पक्षी उसमें बीट कर जाये तो उससे यह तालाब अपवित्र नहीं होता था और यदि कोई अछूत इसका पानी पी ले तो तालाब को अपवित्र मान लिया जाता था। उन्होंने दलितों को मनुष्य होने के अधिकार दिलाने, समाज में समानता दिलाने और जातिविहीन समाज का निर्माण करने के लिए साहसिक प्रयास किये। वे जानते थे कि राजनीतिक अधिकारों का प्राप्त होना पर्याप्त नहीं है, बल्कि दलितों को आर्थिक और सामाजिक समानता का मिलना भी नितांत आवश्यक है। जिस तरह मछली को पानी से अलग नहीं किया जा सकता, तिल को ताड से अलग नहीं किया जा सकता, राहु को केतु से अलग नहीं किया जा सकता ठीक उसी तरह दलितों को उनके सार्वभौमिक समानता के अधिकारों से पृथक नहीं किया जा सकता। जिस समय डॉ.अम्बेडकर दलितों को उनके अधिकारों को दिलाने के लिए जनसंभाए कर रहे थे, उस समय सन् 1927 में उत्तर प्रदेश में स्वामी

अछूतानंद ने दलितों में चेतना जागृत की और आह्वान किया कि दलितों को इस देश में पूर्ण आजादी चाहिए।

डॉ.अंबेडकर ने कहा था कि ''राष्ट्र की गुलामी से अस्पृश्य समाज की गुलामी की हालत ज्यादा दर्दनाक है। इसे समाप्त करने के लिए अस्पृश्यता समाप्त करनी पडेगी, अन्यथा धर्मान्तरण का रास्ता अपनाना पडेगा।'' बौद्ध धर्म ग्रहण करने के पश्चात भी दलित समाज में आपसी मतभेद और विभिन्नताएं व्याप्त हैं। धर्म परिवर्तन करने वालों की कोई जाति नहीं होती है फिर भी वे शादी अपने समाजों में ही करते हैं। यह सत्य है कि धर्मान्तरण और अंतरर्जातीय विवाह का मार्ग भी दलित समाज को सामाजिक समानता दिलाने में नाकामयाब ही रहा है। संविधान के अनुच्छेद-17 के द्वारा अस्पृश्यता समाप्त कर दी गई है। इसके सकारात्मक परिणाम भी दिखाई दे रहे हैं। अनेक जातियां आज भी एक-दूसरे के साथ रोटी-बेटी का सम्बन्ध नहीं जोड़ती हैं। क़ानून ने अपना काम कर दिया है, अब जिम्मेदारी समाज की बनती है कि वह भेदभाव को मिटाने की पहल करे।

अम्बेडकर ने कहा था कि अंतर्जातीय विवाह जाति के तिलिस्म को तोडने में उपयोगी साबित हो सकते हैं। यह विदित है कि सवर्णो ने उनके इस मार्ग को अपनाया है लेकिन जब मूल्यांकन करते हैं भारतीय समाज के पहलुओं का तो यह प्रतीत होता है कि सवर्ण समाज आज भी दलित समाज से अपनी दूरी बनाये हुए है। ब्राहाण अपनी नाते-रिश्तेदारी मुस्लिमों से कर सकते है, लेकिन दलित से नहीं। ब्राहाणों ने दलितों से वर्तमान में भी दूरी बनायी हुई है।

सन् 1960 से 1970 के मध्य उत्तर प्रदेश में रिपब्लिकन पार्टी आफ इंडिया के नेता बी.पी.मौर्य ने सामाजिक आन्दोलन चलाकर दलित चेतना को मजबूत बनाने में अहम भूमिका निभाई और हिंदू धर्म में वर्णित कुप्रथाओं का विरोध किया। डॉ.अम्बेडकर आरक्षण के पक्षधर नहीं थे लेकिन आरक्षण व्यवस्था कांग्रेस के लिए राजनैतिक सत्ता का सुख भोगने का साधन और साध्य बन गई। डॉ.अम्बेडकर ने अंतिम दिनों में कहा था कि मैं इस कारवाँ को बडी मेहनत और संघर्षो के साथ यहां तक लाया हूँ अगर नहीं ले जा सकते हो तो यहीं छोड देना।

कांशीराम ने उत्तर प्रदेश में दलितांे को आत्मसम्मान दिलाने, समतामूलक समाज बनाने, जाति उन्मूलक समाज बनाने, विभाजित समाज को जोडने, बामसेपफ, दलित शोषित संघर्ष समिति और बहुजन समाज पार्टी की स्थापना करके दलितों की सामाजिक, आर्थिक, धर्मिक और राजनीतिक दशा में सुधारों को नई दिशा दी। कांशीराम दूरदर्शी नेता थे, उन्हें विश्वास हो गया था कि मंजिल दूर नहीं है। जिस तरह स्थिर पानी में पत्थर मारने से विक्षोभ पैदा हो जाता है उसी तरह कांशीराम के विचारों ने दलित समाज में उथल-पुथल मचा दी। डॉ.अम्बेडकर ने कहा था कि गुलाम को गुलामी का अहसास करा दो, वह तुरंत विद्रोह कर देगा। भागीदारी आंदोलन ने जातीय ध्रुवीकरण की राजनीति को ही विखंडित कर दिया और कांशीराम ने दलितों के अंदर चेतना जाग्रत करके दलितों को उनकी वोट की कीमत का बोध कराया।

इन तथ्यों के आधर पर यह विदित होता है कि बौद्ध धर्म पूर्णतः वैज्ञानिक है क्योंकि यह शील, समाधि और प्रज्ञा के मार्ग का अनुसरण करता

है। बौद्ध धर्म जीवन जीने की एक कला है। गौतम बुद्ध का कहना है कि मेरी बात को तर्क की कसौटी पर कसना सीखो, तर्कसंगत लगे तो आत्मसात कर लो अन्यथा त्याग कर दो। डॉ.अम्बेडकर ने बौद्ध धर्म को भौतिकवाद के साथ, वैज्ञानिक तार्किकता के साथ, संसदीय प्रजातंत्र के साथ जोडने का प्रयास किया। दलितों को अपना पूर्ण विकास करने के लिए, हिंदू धर्म, जाति और क्षेत्रवाद से बचने के लिए बौद्ध धर्म को आत्मसात करना नितांत आवश्यक है।

निष्कर्ष

उपर्युक्त विवेचन के आधर पर यह स्पष्ट होता है कि आधुनिक दलित चेतना के विकास में बौद्ध धर्म का योगदान अप्रतिम है। बौद्ध धर्म समानता, स्वतंत्रता और भाईचारे के सिद्धांत पर आधरित है। यह कहना अतिशियोक्ति नहीं होगा कि गौतम बुद्ध और डॉ.अम्बेडकर के बिना दलित चेतना और दलित आंदोलन की कल्पना नहीं की जा सकती। बौद्ध धर्म समानता का मार्ग प्रशस्त करता है। देवी प्रसाद के शब्दों में बौद्ध धर्म भारतीय इतिहास का सबसे बडा सामाजिक और धर्मिक आंदोलन था।

संदर्भ ग्रंथ

1 पासवान, डॉ.चंद्रशेखर, बौद्ध धर्म और आधुनिक दलित चेतना, नई दिल्ली: दिल्ली विश्वविद्यालय, 1998

2 भारती, कंवल, मायावती और दलित आन्दोलन, नई दिल्ली: रमणिका फाउंडेशन, 2004

3 गुप्ता, रमणिका, दलित चेतना-सोच, बिहारः नवलेखन

4 गुप्ता, रमणिका, दलित चेतना-सोच, बिहारः नवलेखन

5 लिंबाले, शरण कुमार, दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र, नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन, 1997, पृष्ठ-70

6 आर्य, लाल, दलित समाजः आज की चुनौतियां, नई दिल्ली: प्रकाशन संस्थान, पृष्ठ- 21

7 कीर, धनञ्जय, डॉ.अम्बेडकर का जीवन और उद्देश्य, प्रथम संस्करण, दिल्ली: पोपुलर प्रकाशन, 1990

8 दुबे, अभय कुमार, आधुनिकता के आईने में दलित आन्दोलन, नई दिल्लीः वाणी प्रकाशन, 2008.

9 देसाई, ए.आर., भारतीय राष्ट्रवाद की सामाजिक पृष्ठभूमि, नई दिल्लीः मैकमिलन प्रकाशन, 1988

10 नैमिशराय, मोहनदास, डॉ.अम्बेडकर और मार्टिन लूथर किंग का जीवन संघर्ष, नई दिल्लीः नीलकंठ प्रकाशन, 2000

11 चंचरीक, कन्हयालाल, आधुनिक भारत का दलित आंदोलन, नई दिल्लीः दया पब्लिशर, 2006

12 तेलतुमड़े आनन्द, सत्ता, समाज और दलित, दिल्लीः एम.एस. पब्लिशर्स, 2011

13 संघरक्षित, अम्बेडकर और बुद्धिज्म, प्रथम संस्करण, दिल्लीः मोती लाल बनारसी दास, 2006